→ कुषाण वंश

कनिष्क प्रथम

डॉ० कोमल
अतिथि प्राध्यापक
SNSRKS, College
इतिहास विभाग

Scanned with CamScanner

कनिष्क की शासन व्यवस्था

कनिष्क प्रथम एक महान विजेता था। कनिष्क की शासन व्यवस्था का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त नहीं होता है फिर भी सारनाथ के अभिलेख से उसकी शासन व्यवस्था पर जो प्रकाश पड़ता है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि वह एक महान विजेता ही नहीं बल्कि एक महान शासन प्रबंधक भी था। उसने अपने विशाल साम्राज्य को प्रान्तों में विभक्त करके उनका प्रशासन क्षत्रपों के अधिकार में दिया था और इस प्रकार उसने क्षेत्रीय शासन व्यवस्था को अपनाया था।

कनिष्क के पूर्वी साम्राज्य में वनस्पर क्षत्रप तथा खर-पल्लान महाक्षत्रपों का उल्लेख प्राप्त होता है। इसी प्रकार अन्य प्रांतों में भी व्यवस्था थी। कनिष्क बहुत ही उदार तथा प्रजावत्सल सम्राट था। वह अपनी प्रजा को पुत्र के समान मानता था। भारतीय प्रजा के साथ उसका कुषाणों के समान ही व्यवहार था। वह एक ऐसा सम्राट

Scanned with CamScanner

था जिसके मनोगात पर विदेशतत्व का भाव नाम मात्र का भी नहीं दिखाई पड़ता था। और वह स्वयं को पूर्ण रूपेन भारतीय मानता था। उसने समस्त जनता के लिये सुख शांति की व्यवस्था की थी। वह बहुत ही लोक-कल्याणकारी शासक था। उसके शासन व्यवस्था में एक ही दोष था वह दोष यह था कि उसका सैनिक शासन स्थायी सिद्धांत पर आधारित नहीं था। जिसके कारण सम्राट की शक्ति नष्ट होते ही सैनिक की शक्ति भी नष्ट हो गई।

→ कनिष्क का धर्म :-

कनिष्क आरंभ में यूनानी धर्म को मानने वाला था। वह अशोक की ही भांति पहले क्रूर तथा निर्दय शासन था। मगध के आक्रमण के समय उसे बौद्ध विद्वान अश्वघोष प्राप्त हुआ। जिसके सम्पर्क में आकर वह बौद्ध धर्म से इतना प्रभावित हुआ कि उसने

बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेने के पश्चात् वह बहुत ही दयालु तथा सहृदय बन गया था। उन्होंने भी बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये अशोक के समान ही साधनों को अपनाया था। इसी कारण से कनिष्क को इतिहास में बहुत सारे लोग छोटा कनिष्क अशोक कह कर सम्बोधित करते थे। वास्तव में कनिष्क की प्रसिद्धि का कारण उसका चतुर्दिक विजय या शासन पद्धति ना होकर उसके द्वारा बौद्ध धर्म का प्रचार करना ही था। उसकी धार्मिक नीति अशोक के समान ही उदार थी तथा वह सभी धर्मों का आदर करता था।

→ डॉ० राय चौधरी के अनुसार,

"कनिष्क की ख्याति उतनी अधिक उसके विजयी हो पर आधारित नहीं है जितनी कि बौद्ध धर्म के प्रचारक बनने पर"

अभिलेखों तथा ग्रन्थों से ऐसा आभास होता है कि वह अपने राज्य काल में बौद्ध हो गया था। उसने बौद्ध धर्म के प्रचार तथा उसके प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिये उन्होंने बहुत सारे मठों का निर्माण करवाये।

निष्कर्षतः

उपरोक्त तथ्यों के अध्ययन यह स्पष्ट होता है कि कनिष्क की धार्मिक नीति बड़ी ही उदार थी। उसमें उच्चकोटि की धार्मिक सहिष्णुता थी। उसने बौद्ध धर्म को स्वीकार करके उसे राज्य धर्म घोषित कर दिया था। फिर भी कनिष्क अन्य धर्मों का भी आदर करता था। उनकी मुद्राओं पर शिव, सूर्य, अग्नि तथा बुद्ध की मूर्तियां बनी हुई पायी गई। अर्थात् कनिष्क बहुत ही धार्मिक विचार का व्यक्ति था।

Scanned with CamScanner